

दयाकर दया सिधूं रघुवर दया कर, रघुवर दया कर ।

शरणि में पड़ा हूं मस्तक झुकाकर, रघुवर दया कर ॥

माता कुटिलता ने मुझको मारा बन बन भटकता फिरता मैं बेचारा

दीजे सहारा भुजा से उठाकर— रघुवर दया कर ॥

मेरे कारण प्रभु बनवास लिया है जटा मुकुट तापस वेश किया है

फटता है हृदय आसूं बहाकर —रघुवर दया कर ॥

तुमहीं हो मेरी नैना के खिवैया तुमहीं हो मेरे दुख के हरैया

डूबते उबारो चरण सों लगाकर— रघुवर दया कर ॥

बचपन से कर आये हो छोहू कबहूं न कीन करुणा निधि कोहू

विधिना दियो दुख मुझको अघाकर— रघुवर दया कर ॥

अब मेरो जीवन जानियो ऐसे मणि विहीन भुजंग हो जैसे

कृपा करो मेरा जीवन बचाकर— रघुवर दया कर ॥

शतवारी साईं विनती हमारी लौट चलो निज नगरी प्यारी

बैठो सिंहासन शोभा बढ़ाकर— रघुवर दया कर ॥

मैगसि मैया की आशा यही प्यारे पलभर चरण से कीजो न न्यारे

बख़्श लो मेरी खता को क्षमा कर— रघुवर दया कर ॥

